B.A. Part – III
Philosophy Paper – VII

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

"अनुमान किसे कहते हैं ? स्वार्थानुमान एवं परार्थानुमान की व्याख्या करें"

अनुमान शब्द 'अनु' और 'मान' शब्दों के योग से बना है। 'अनु' का अर्थ है बाद में तथा 'मान' का अर्थ है ज्ञान। इस प्रकार अनुमान का अर्थ होगा पश्चात्वर्ती ज्ञान। यानी एक ज्ञान के बाद और उसके द्वारा उत्पन्न होनेवाला दूसरा ज्ञान अनुमान है जैसे धूम से वह्नि का ज्ञान। किसी हेतु या लिंग के ज्ञान से उस लिंग को धारण करनेवाले लिंगी का ज्ञान अनुमान है। अतः अनुमान के सम्बन्ध में कहा गया है — 'तल्लिङ्गिलिङ्ग पूर्वकम्' यह परोक्ष ज्ञान है जो हेतु से उत्पन्न होता है। हेतु का साध्य के साथ नियत सम्बन्ध है।

न्यायसूत्रकार महर्षि गौतम ने अनुमान को 'तत्पूर्वक' कहा है। यहाँ 'तत्' पद का अर्थ प्रत्यक्ष से है यानी प्रत्यक्ष द्वारा ज्ञात वस्तु से किसी अज्ञात वस्तु का जो ज्ञान होता है वही अनुमान कहलाता है। अनुमान या अनुमिति को परामर्शजन्य ज्ञान कहा गया है। 'परामर्शजन्य ज्ञानमनुमितिः'। अनुमान हेतु के द्वारा पक्ष में साध्य की सिद्धि का ज्ञान है जो हेतु और साध्य के व्याप्तिसम्बन्ध ज्ञान से तथा हेतु की पक्ष में विद्यमानता के ज्ञान से सिद्ध होता है। जैसे हम कहते हैं —

पहाड़ पर आग है
क्योंकि वहाँ धुआँ है
जहाँ-जहाँ धुआँ है वहाँ-वहाँ आग है।

उपर्युक्त तथ्य को स्पष्ट करने के क्रम में इस अनुमान में हम तीन अवयव को पाते हैं —
(1) पक्ष (2) साध्य (3) हेतु।

Scanned with CamScanner

पक्ष अनुमान का वह अवयव है जिसके सम्बन्ध में अनुमान किया जाता है इस उदाहरण में पहाड़ पक्ष है क्योंकि पहाड़ के सम्बन्ध में अनुमान किया गया। पक्ष के सम्बन्ध में जो कुछ सिद्ध किया जाता है उसे साध्य कहते हैं। आग साध्य है क्योंकि पहाड़ पर आग का होना ही सिद्ध किया गया है। जिसके द्वारा पक्ष में साध्य का होना बतलाया जाता है वह हेतु है। उपर्युक्त अनुमान में धुआँ हेतु है क्योंकि धुएँ को देखकर ही पहाड़ पर आग (साध्य) होने का अनुमान किया गया है।

न्याय ने अनुमान में आगमन और निगमन तर्क को विभक्त न करते हुए दोनों का समावेश किया है। अतः यहाँ हम पाते हैं कि अनुमान में आधारित एवं वास्तविक दोनों तर्क का समन्वय है। अतः अनुमान का विभाजन दो वर्गों में हो जाता है—

(1) स्वार्थानुमान (2) परार्थानुमान

स्वार्थानुमान मनुष्य अपने लिए करता है तथा एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है इस तरह के अनुमान में तीन वाक्य होते हैं—

किन्तु कभी-कभी हमें दूसरों के सामने किसी तथ्य को प्रमाणित करने के लिए भी अनुमान का सहारा लेना पड़ता है ऐसी स्थिति में हमारे अनुमान का स्वरूप स्वार्थानुमान से परार्थानुमान में परिवर्तित हो जाता है परार्थानुमान में यह तीन ही होते हैं किन्तु पाँच वाक्य होते हैं — जिन्हें प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन कहते हैं। चूँकि परार्थानुमान में पाँच अवयव होते हैं इसलिए इसे पंचावयव अनुमान भी कहा जाता है। अब हम एक-एक कर अनुमान के पंचावयव की व्याख्या करेंगे—

(1) प्रतिज्ञा — अनुमान द्वारा जिस वाक्य को सिद्ध किया जाता है उसे प्रतिज्ञा कहा जाता है जैसे - जब हम पहाड़ पर आग को सिद्ध करना चाहते हैं, तो ऐसा करने के पूर्व ही हम दूसरों के सामने स्पष्ट रूप से इसे प्रकाशित करते हैं। जिसे सिद्ध

करना है उसका निर्देश करना ही प्रतिज्ञा है।

'पहाड़ पर आग है' यह प्रतिज्ञा के रूप में प्रथम वाक्य में ही रहता है। यह प्रतिज्ञा जब सिद्ध हो जाता है तो अन्तिम वाक्य में निष्कर्ष के रूप में प्रतिष्ठित होता है।

(2) हेतु — अपनी प्रतिज्ञा को सिद्ध करने के लिए जो युक्ति दी जाती है उसे 'हेतु' कहते हैं। उदाहरण के लिए पर्वत पर आग को प्रमाणित करने के लिए हम धुएँ का सहारा लेते हैं और कहते हैं 'क्योंकि पर्वत पर धूम है' इसे ही हेतु कहते हैं। हेतु के द्वारा हम अपने पक्ष में साध्य का अस्तित्व साबित कर सकते हैं।

(3) उदाहरण सहित व्याप्ति वाक्य — जिस युक्ति के आधार पर साध्य को प्रमाणित किया जाता है उसकी पुष्टि के लिए दृष्टान्त उपस्थित करना उदाहरण है। यदि हम धुआँ के आधार पर आग को प्रमाणित करना चाहते हैं तो इसके लिए हम यह दृष्टान्त देते हैं कि रसोई घर में धुआँ के साथ आग भी रहती है। यही दृष्टान्त उदाहरण है किन्तु दृष्टान्त में हेतु और साध्य के बीच व्याप्ति सम्बन्ध का होना आवश्यक है।

(4) उपनय — उदाहरण के साथ हेतु और साध्य का व्यापक सम्बन्ध दिखलाने के पश्चात् अपने पक्ष में उसे दिखलाना ही उपनय है। धुआँ और आग का जो व्याप्ति सम्बन्ध है उसी का विशेष प्रयोग पहाड़ के सम्बन्ध में किया जाता है। जैसे जब हम कहते हैं कि 'पहाड़ पर धुआँ है' और हमें आग के अस्तित्व को प्रमाणित करना है, तो इसके लिए कोई स्थान चाहिए क्योंकि शून्य में 'आग का होना' नहीं दिखलाया जा सकता है। अतः उपनय वह वाक्य है जो इस इच्छा की पूर्ति करता है।

(5) निगमन — जिसे हमें सिद्ध करना है वही निगमन है। जब तक इसे सिद्ध नहीं किया जाता है यह प्रतिज्ञा कहलाता है और जब यह सिद्ध हो

Scanned with CamScanner

जाता है यह प्रतिज्ञा कहलाता है और जब यह सिद्ध हो जाता है तो इसे निगमन कहा जाता है। जैसे 'पर्वत पर आग है' यही निगमन है।

पंचावयव अनुमान के विभिन्न वाक्यों को एक उदाहरण द्वारा इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है —

(1) पर्वत पर आग है — प्रतिज्ञा।
(2) क्योंकि इसमें धुआँ है — हेतु।
(3) जहाँ-जहाँ धुआँ होता है वहाँ-वहाँ आग होती है जैसे रसोई घर में — उदाहरण सहित व्याप्ति वाक्य।
(4) पहाड़ पर धुआँ है — उपनय।
(5) इसलिए पहाड़ पर आग है — निगमन।

इस प्रकार हम पाते हैं कि पंचावयव अनुमान में पाँच वाक्यों के रखने से निष्कर्ष अधिक मजबूत हो जाता है।

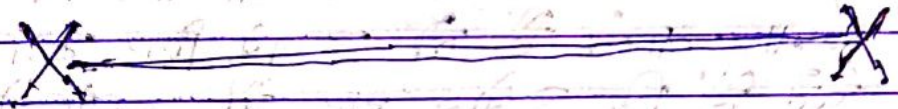

Scanned with CamScanner